प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों की परिशुद्धता एवं प्रभाव का अध्ययन

पीएच.डी. जनसंचार एवं पत्रकारिता उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध पर्यवेक्षक
प्रो.(डॉ.) गोविन्द जी पाण्डेय

शोधार्थी
शचीन्द्र शेखर शकुन्त
पंजीयन सं.852/14

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
सूचना विज्ञान एवं तकनीकी विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड – लखनऊ

प्रस्तावना (Introduction)

विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO) की उद्देशिका के अनुसार **'एक राज्य जो पूर्णत भौतिक, मानसिक और सामाजिक रूप से ठीक है.'**

अक्सर कहा जाता है कि **"जान है तो जहां हैं"** अर्थात स्वस्थ निरोगी काया है तो जीवन की हर डगर आसान है. निसंदेह भौतिक रूप से विकसित आधुनिकी एवं भागम-भाग भरी ज़िंदगी के माहौल में इंसान का आम जिन्दगी के साथ जीना-रहना मुश्किल हो रहा हैं या यूं कहे की मानव आपाधापी भरी जिन्दगी में सुविधाओं से युक्त होते हुए भी तमाम तरह की परेशानियों से जूझ रहा है जिसमे स्वास्थ मुख्य रूप से प्रमुख तत्व है और इसी फली-फूली स्वास्थ सुविधा को आम आदमी के खाने की टेबल से लेकर उसके जीवन शैली को बदलने का कार्य किया है आधुनिक मीडिया ने. इसी मीडिया की बदौलत स्वास्थ्य संचार में आज अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिले हैं.

स्वास्थ्य संचार किसी भी राष्ट्र का महत्वपूर्ण विषय है जो सीधे-सीधे जनता को प्रभावित करता है. मीडिया का स्वास्थ्य के प्रति लोगों का नजरिया बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि कई बार रूढ़िगत मान्यताओं तथा विचारों में परिवर्तन का काम केवल जनमाध्यमों की मदद या उनके प्रभाव से पूरा हो पता है. स्वास्थ्य के रक्षण में संचार अत्यंत महत्वपूर्ण है. स्वास्थ्य दवाओं से ज्यादा जागरूकता से बेहतर होता है. लोगों में जब स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता वांछित स्तर तक मौजूद रहती है तो स्वास्थ्य दशाएँ भी अपने आप बेहतर बनी रहती है. स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता को ही व्यक्ति की स्वास्थ्य संबंधी समझ की स्वास्थ्य चेतना के रूप में परिलक्षित किया जाता है.

निसंदेह स्वास्थ्य सम्पूर्ण विश्व मानव के विकास के बुनियादी तत्व के रूप में उपस्थित है. एक स्वस्थ्य शरीर और दिमाग व्यक्तिगत के लिए तो महत्तवपूर्ण है ही साथ

में एक स्वस्थ्य समाज के लिए भी जरूरी है.क्योंकि अस्वस्थ समाज से आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास संभव नहीं है. विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO) की उद्देशिका के अनुसार 'एक राज्य जो पूर्णत भौतिक, मानसिक और सामाजिक रूप से ठीक है.' स्वास्थ्य की श्रेणी में आयेगा. भगवान बुद्ध ने कहा था "शरीर को अच्छी तरह स्वस्थ रखना एक दायित्व हैं एक संसाधन है उसके बिना हम अपना मस्तिष्क मजबूत और स्पष्ट नहीं रख पाएंगे." परन्तु जब हम अपने देश में स्वास्थ्य के स्तर पर निगाह डालते हैं तो एक निराशा जनक तस्वीर ही सामने आती है. जबकि आज पूरी दुनियाँ के सभी देश अपने नागरिकों के स्वास्थ्य के प्रति सजग हैं वास्तव में अस्वस्थ शरीर मानव संसाधन के रूप में विकसित नहीं किया जा सकता. राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि स्वस्थ बच्चे का जन्म हो, रोगों से उसे सुरक्षा मिले, पोषण सरंक्षण उसे उपलब्ध हो तथा उसके शारीरिक-मानसिक विकास में कोई बढ़ा नहीं हो. इसलिये कोई भी राष्ट्र विकसित तभी माना जाता है जब वह अपने नागरिकों को स्वास्थ्य सरंक्षण प्रदान करने में सक्षम हो. निसंदेह जीवन शैली, चयन पर निर्भर होती है और चयन, सूचनाओं तथा संपर्क की प्रक्रिया तथा स्वास्थ्य के फल पर निर्भर होता है. संचार माध्यम ये सूचनाएं लोगों तक पहुंचाते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में किसी व्यक्ति के पास क्या विकल्प हैं और वह क्या चयन कर सकता है. वे अपनी इन अर्थपूर्ण सूचनाओं के माध्यम से लोगों की मान्यताओं, सोच, आकांक्षाओं, चयन और व्यवहार और वस्तुतः उनकी जीवन शैली के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. जनता को जनमाध्यमों कि मदद से ही यह जानकारियाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं. कई ऐसी बीमारियाँ होती हैं जिनका बचाव अपेक्षित जागरूकता से ही किया जा सकता है.

जहां तक प्रिंट मीडिया के योगदान पर बात की जाये तो स्वास्थ्य के क्षेत्र में संचार माध्यमों की भूमिका सदैव से ही अहम रही है. यही कारण है कि भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय में अलग से ही एक सूचना, शिक्षा एवं संचार विभाग की स्थापना की हुई है. लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति राज्य नीति की सफलता के मूल्यांकन का महत्वपूर्ण मानक होती है. जिसमें व्यक्ति का स्वास्थ्य राष्ट्र के स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करता है. मीडिया स्वास्थ्य संचार के प्रसार में सूचनात्मक, उत्प्रेरक, सलाहकार आदि कि भूमिकाओं का निर्वहन करतें हैं.

यद्दपि जनस्वास्थ्य के सुधार के लिए स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को होना चाहिए. इस ज्ञान के अभाव में कोई सुधार नहीं हो सकता. स्वास्थ्य संबंधी कानून की उपयोगिता स्वास्थ्य संचार के अभाव में नगण्य है और स्वास्थ्य संचार द्वारा जनता में स्वास्थ्य चेतना होने पर कानून को विशेष आवश्यकता नहीं रहती. स्वास्थ्य संचार वही सफल होता है जो जनता को स्वस्थ्य जीवनयापन की ओर स्वभावत: प्रेरित कर सके. प्रत्येक प्राणी को अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए स्वास्थ्य संचार तथा सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त होनी चाहिए. यह तो जन्मसिद्ध मानव अधिकार है और कोई कल्याणकारी राज्य इससे मुख नहीं मोड़ सकता. रोग एक देश से दूसरे देशों में भी फैल जाते हैं. इसलिए किसी राज्यविशेष का यदि स्वास्थ्य स्तर गिरा हुआ है तो वह सभी राज्यों के लिए भयावह है. इसी कारण अंतर्जातीय संस्थाओं द्वारा रोगनियंत्रण और स्वास्थ्यसुधार का कार्य सभी जिलों, क्षेत्रों और राज्यों में करने का प्रयास किया जाता है. स्वास्थ्य की देखरेख जन्म से मृत्यु पर्यंत सभी के लिए आवश्यक है. मातृत्व स्वास्थ्य, बाल स्वास्थ्य, व्यावसायिक स्वास्थ्य, संक्रामक और अन्य रोगों की रोकथाम, रोगचिकित्सा, जल, भोजन और वायु की स्वच्छता, परिवेश स्वास्थ्य आदि

स्वास्थ्य संचार के महत्वपूर्ण अंग है. कतिपय मीडिया ने स्वास्थ को क्षेत्रीय स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक संवाहक की भूमिका उठाई है जिससे जन जीवन में लाभ उठाया जाता है.

शोध समस्या:

'प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों की परिशुद्धता एवं प्रभाव का अध्ययन' दैनिक समाचारपत्रों के विशेष सन्दर्भ में, विषय की शोध समस्या यह है कि समाज में प्रिंट मीडिया की भूमिका अहम है. लोग बोलने से जायदा लिखे हुए पर विश्वास अधिक करतें हैं. लेकिन हम इसको नहीं देखते हैं कि प्रिंट मीडिया किस तरह प्रकाशित अंकों में स्वास्थ्य सम्बन्धी ख़बरों के कंटेंट को प्रस्तुत कर रहा है, ख़बरों का स्त्रोत कितना विश्वसनीय है एवं समाज पर इसका कितना और कैसा प्रभाव पढ़ रहा है?

शोध के उद्देश्य:

जब शोध को विभिन्न दिशाओं तथा दशाओं में बांटा जाता है तब हर बिन्दु पर तार्किक एवं विवेचनापूर्ण तरीके से अध्ययन किया जाता है वही उद्देश्य होता है. किसी भी शोध का उद्देश्य उस शोध की सारी संभावित प्रक्रिया तो तय करते ही हैं साथ ही शोध को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित करते हैं. जिससे शोध अपने उद्देश्यों के प्रति बना रहता है तथा उसमे भटकाव नहीं होता है वास्तव में बिना उद्देश्य के शोध संभव ही नहीं है. 'प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों की परिशुद्धता एवं प्रभाव का अध्ययन' विषय पर शोध के निम्न उद्देश्य हैं.

वृहद उद्देश्य: प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संचार संबंधी समाचारों का अध्ययन करना और पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना.

अन्य विशिष्ट उद्देश्य: प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य हैं.

1. प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संचार संबंधी ख़बरों के प्रकार का अध्ययन करना.
2. प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संचार संबंधी समाचारों की आवृत्ति का अध्ययन करना.
3. प्रिंट मीडिया में प्रकाशित सरकारी स्वास्थ्य समाचारों का अध्ययन करना.
4. प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संचार संबंधी समाचारों का पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना.
5. प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों के स्त्रोत का अध्ययन करना.

शोध प्रश्न: वस्तुतःशोध प्रश्न अध्ययन की स्पष्ट दिशा तय करते हैं. जो कि निम्न हैं:

प्रश्न 01: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों में वर्गीकरण होता है?

प्रश्न 02: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य ख़बरों की आवृत्ति बार बार होती है?

प्रश्न 03: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित सरकारी स्वास्थ्य ख़बरों के माध्यम से सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है?

प्रश्न 04: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों को पढ़कर पाठकों के व्यवहार में परिवर्तन होता है?

प्रश्न 05: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों के स्त्रोत प्रमाणिक होते हैं?

शोध प्राविधि एवं सीमायें:

वास्तव में शोध प्रविधि के द्वारा ही किसी भी शोध की क्रिया–प्रक्रिया परिपूर्ण होती है यह वह तरीका होता है जिसके माध्यम से शोध से परिणाम निकाले जाते हैं हमारे इस प्रस्तुत शोध प्रबंध में मुख्य रूप से अंतर्वस्तु विश्लेषण, सर्वेक्षण एवं उद्देश्यपरक निदर्शन प्रविधि का प्रयोग किया गया है। जिसमे प्रश्नावली एवं समाचारों के अध्ययन आदि के माध्यम से शोध के तथ्यात्मक आंकड़ों को निकाला गया है जिसके आधार पर ही निष्कर्ष पर पहुंचा गया है। जहां तक बात कि जाए शोध समय सीमा की तो हमने शोध की समय सीमा 1 जनवरी 2017 से 30 जून 2017 तक के प्रकाशित अंकों को ही इसमें शामिल किया है।

अध्ययन का प्रकार:

'प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों की परिशुद्धता एवं प्रभाव का अध्ययन' यक़ीनन एक गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध अध्ययन है. गुणात्मक अध्ययन का सबसे बड़ा लाभ है कि इसमें सैंपल साइज भी अपेक्षाकृत काफी छोटा होता है प्रस्तुत शोध प्रबंध विवरणात्मक है जिसमें हमने केवल लखनऊ से प्रकाशित होने वाले अंकों को ही शामिल किया है साथ ही केवल लखनऊ महानगर के पाठकों को ही शामिल किया गया है।

सैंपल डिजाइन:

प्रस्तुत शोध में सैंपल डिजाइन के निम्न अवयव हैं.

यूनिवर्स – प्रस्तुत शोध अध्ययन में समाचारपत्रों में प्रकाशित सभी स्वास्थ्य समाचार यूनीवर्स होंगे. इसके साथ ही, पाठक पर स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए लखनऊ के सभी पाठकों ने मिलकर यूनिवर्स का निर्माण किया है.

प्रतिदर्श के अवयव (सैंपलिंग एलीमेंट) – शोध के दौरान पूरे यूनिवर्स का अध्ययन करना संभव नहीं होगा. इस कारण सैंपलिंग एलीमेंट का चयन किया गया है. प्रस्तुत अध्ययन के लिए ABC सर्वे के आधार पर हिंदी के सबसे अधिक प्रसारित होने वाले दो दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, अमर उजाला और अंग्रेजी के द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्रों का चयन किया गया है. सर्वेक्षण के लिए भी लखनऊ के पाठकों का चुनाव किया गया है.

प्रतिदर्श की इकाई का चयन (सेलेक्टिंग सैंपलिंग यूनिट) - प्रस्तुत शोध में प्रिंट मीडिया में प्रकाशित स्वास्थ्य संचार संबंधी समाचारों को सैंपल यूनिट माना गया है. जिसमें स्वास्थ्य समाचारों को अध्ययन के अनुरूप चार भागों में वर्गीकृत किया है. 1. शोधपरक समाचार, 2. स्वास्थ्य कैम्प/शिविर से सम्बंधित समाचार, 3. सरकारी स्वास्थ्य समाचार, 4. असाध्य रोग(हृदय, कैंसर, एड्स, टीबी) और 5. मौसमी बीमारियाँ. प्रभाव के अध्ययन लिए 500 प्रश्नावलियों का अध्ययन किया गया है.

प्रतिदर्श चयन की विधि (सैंपलिंग तकनीक) - शोध के लिए चुने गए समाचार पत्रों में स्वास्थ्य संचार संबंधी सभी स्वास्थ्य समाचारों का चयन एवं पाठकों के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन के लिए उद्देश्यपरक नमूनीकरण (पर्पजिव सैंपलिंग) तकनीक का उपयोग किया गया है.

अध्ययन की अवधि – ABC के अनुसार दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित ख़बरों के सन्दर्भ में हिंदी के सबसे अधिक प्रसारित होने वाले दो दैनिक जागरण अमर उजाला और अंग्रेजी के द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, द हिन्दू समाचार पत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संचार संबंधी समाचारों का चयन छह माह की अवधि के दौरान अध्ययन किया गया है. जिसमें 1 जनवरी 2017 से 30 जून 2017 तक के प्रकाशित अंको के स्वास्थ्य समाचारों का

चयन किया गया है. इसके साथ ही, पाठक की प्रतिक्रिया और उन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए क्लोज प्रश्नावली का भी सहयोग लिया गया है. प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया है.

शोध का महत्व :

यद्दपि किसी भी संचार का महत्व उसकी प्रतिपुष्टि से होता है लेकिन स्वास्थ्य संचार में संचार का महत्व निदान के रूप में ही संभव होता है चूंकि किसी भी बीमारी, समस्या के समाधान हेतु उसके निवारण की जरूरत होती है जिसमें केवल अपुष्ट संचार न होकर पुष्ट तथा निदानात्मक संचार की महत्ता होना परमावश्यक है साथ ही निदान की अनुपस्थिति में स्वास्थ्य संचार संभव नहीं है. हमारे इस शोध का लाभ यह है की हम मीडिया की स्वास्थ्य के प्रति भूमिका को जान संकेंगे. यद्दपि शोध का लाभ, शोध के माध्यम से समाचारपत्रों से जुड़ा है जो कि आज के मानव के विकास के संवाहक हैं, समाचारपत्रों का आपाधापी भरे वर्तमान भौतिक स्वरूप में स्वास्थ के प्रति लोगों को जागरूक करना तथा एक स्वास्थ समाज का निर्माण करना हैं. किसी भी शोध की महत्ता समाज से ही जुडी होती हैं जिसमे समाज को विभिन्न द्रष्टिकोण से मापा जाता हैं एवं उसकी रूप रेखा तैयार की जाती है समाचारपत्रों द्वारा स्वास्थ सम्बंधित समस्याओ तथा इनके निदानो के प्रति उत्तरदायित्व से जुडाव होता हैं जो की सामाजिक कल्याण का ही एक पहलू हैं. साथ ही मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्वों को जान सकेंगे. हालांकि स्वास्थ्य संचार को प्रभावी बनाने के लिये सरकार तथा निजी दोनों ही स्तर पर जन-जागरण अभियान, नीतियों, कैमपेन आदि चलाये जाते हैं लेकिन यहाँ पर गौर करने वाली बात है कि जब स्वास्थ्य संचार के द्वारा स्वास्थ्य समाज का निर्माण नहीं हो पाता है तब तक दोनों ही सरकारी तथा निजी स्वास्थ्य संचार व्यवस्था को प्रखररत एवं

गतिशील बनाये रखना होगा. कहना अतिशयोक्ति न होगी अगर जनमाध्यमों के सुचारु एवं सुव्यवस्थित तरीके से किये गये संचार का सदुपयोग ही एक स्वास्थ्य समाज एवं राष्ट्र का निर्माण कर सकता है. प्रस्तुत शोध प्रारूप में हमने स्वास्थ्य संचार के विविध पहलुओं का अध्ययन किया है जिसमें सर्वप्रथम हम स्वास्थ्य और स्वास्थ्य संचार के विभिन्न आयामों का वर्गीकरण किया गया है. स्वास्थ्य क्यों महत्वपूर्ण है ? यह जानने का प्रयास किया गया है, समाचारपत्रों की इसमें क्या भागेदारी है?, लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?. या यों कहे कि हम चयनित उत्तर-प्रदेश की राजधानी परिक्षेत्र के निवासियों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि वह लोग स्वास्थ्य के प्रति कितने जागरूक हैं, ये लोग स्वास्थ्य के बारें में आवश्यक जानकारी कहाँ से प्राप्त करतें हैं. क्या प्रिंट मीडिया इन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता प्रदान कर रहा है ? अगर हाँ तो कैसे ? आदि विभिन्न तरह के सवालों को जानने की कोशिश की गयी है.

निष्कर्ष :

मुद्रित जनमाध्यमों में स्वास्थ्य संचार पर केन्द्रित उपयुक्त शोध के दौरान हमने शोध प्रारम्भ होने से पूर्व शोध को स्वरूप, उद्देश्य, आदि सीमाओं में बांधकर परिणाम तक पहुंचा गया है. वास्तव में देखा जाए तो किसी भी किए गए लिखित या मौखिक कार्य की सफलता उससे प्राप्त हुए परिणामों पर निर्भर करती है और अगर कोई भी कार्य जब लिखित रूप में हो उसमें भी तथ्य, आंकड़ों के सहारे परिपूर्ण होने वाले कार्य का निचोड़ हो तो नि:संदेह उसकी महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है. इसी निचोड़ को हमने शोध के अंत में प्रस्तुत किया है जो हमारे इस शोध प्रबंध के दौरान किए गए कार्य का सम्पूर्ण लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है. इस तरह हम अपने शोध से प्राप्त हुए परिणामों को निम्नलिखित तरीके से व्यक्त कर सकतें हैं-

शोध प्रश्न 01: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों में वर्गीकरण होता है?

शोध अध्ययन में स्वास्थ्य से संबंधित समाचारों के वर्गीकरण पर अध्ययन के बाद पता चलता है कि स्वास्थ्य समाचार के विभिन्न वर्गीकरण हो सकते हैं लेकिन हमारे शोध अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार इसे पांच भागों में विभक्तकिया गया है. वास्तव में स्वास्थ्य समाचारों का वर्गीकरण समाचारों की परिशुद्धता को मापने के लिए किया गया है. इसमें साफ-साफ ज्ञात होता है कि स्वास्थ्य समाचार या सरकारी समाचार या मौसमी बीमारियों से संबंधित समाचार, आम जनता के लिए ही है. जिसमें शोध सामग्री एवं अनुसंधान की बात करें तो इसमें दैनिक जागरण से 86 स्वास्थ्य खबरें प्रकाशित की गई, अमर उजाला से 42 स्वास्थ्य खबरें प्रकाशित की गई, द टाइम्स ऑफ इंडिया से 24 स्वास्थ्य खबरें प्रकाशित की गई और हिंदुस्तानटाइम्स से 9 स्वास्थ्य खबरों को प्रकाशित किया गया.

स्वास्थ्य कैंप या शिविर से संबंधित स्वास्थ्य समाचारों की बात करें तो दैनिक जागरण ने कुल 35 स्वास्थ्य खबरों को प्रकाशित किया, अमर उजाला ने 33 स्वास्थ्य खबरों को प्रकाशित किया है. जबकि द टाइम्स ऑफ इंडिया ने पांच खबरों को प्रकाशित किया है वहीं हिंदुस्तान टाइम्स ने केवल चार स्वास्थ्य खबरों को प्रकाशित किया है. सरकारी स्वास्थ्य समाचारों के अंतर्गत आने वाले स्वास्थ्य समाचारों की संख्या मैं दैनिक जागरण ने 101 स्वास्थ्य समाचार प्रकाशित किए, अमर उजाला ने 71 स्वास्थ्य समाचार प्रकाशित किए, द टाइम्स ऑफ इंडिया ने 47 समाचार प्रकाशित किए और हिंदुस्तान टाइम्स ने 23 स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन किया. असाध्य रोग के अंतर्गत आने वाले स्वास्थ्य समाचारों में दैनिक जागरण ने 49 समाचार प्रकाशित किए तो अमर

उजाला ने 37 स्वास्थ्य समाचारों को प्रकाशित किया वहीं द टाइम्स ऑफ इंडिया ने 26 स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन किया एवं हिंदुस्तान टाइम्स ने 43 स्वास्थ्य खबरों को प्रकाशित किया है. मौसमी बीमारियों के आधार पर स्वास्थ्य समाचारों की बात करें तो इसमें भी दैनिक जागरण ने 26 स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन किया है जबकि अमर उजाला ने 30 स्वास्थ्य समाचार का प्रकाशन किया है तो दूसरी ओर दी टाइम्स ऑफ इंडिया ने 11 स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन किया है तथा हिंदुस्तान टाइम्स ने 9 स्वास्थ्य खबरों को प्रकाशित किया है.

इस तरह देखा जाए तो स्वास्थ्य समाचारों की वर्गीकरण के आधार पर कुल चयनित स्वास्थ्य समाचार दैनिक जागरण में प्रकाशित होने वाले की संख्या 297 है. वही अमर उजाला में यह संख्या 206 है जबकि द टाइम्स ऑफ इंडिया में कुल स्वास्थ्य समाचारों की संख्या 113 है और हिंदुस्तानटाइम्स में यह संख्या 28 है.

शोध प्रश्न 02: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य ख़बरों की आवृत्ति बार बार होती है?

इस प्रश्न के अध्ययन में ज्ञात हुआ कि सभी स्वास्थ्य समाचारों में आवृत्ति होती है जिसमें शोध एवं अनुसंधान से संबंधित स्वास्थ्य समाचारों में 27 स्वास्थ्य समाचार ऐसे थे जिनकी पुनरावृत्ति हुई यहां यह बताना जरूरी है कि स्वास्थ्य समाचारों की शब्दावली में प्रयोग जरूर हुआ परंतु यह समाचार पुनः दोहराए गए. अमर उजाला में शोध से संबंधित स्वास्थ्य समाचारों की संख्या 19 आई तो दी टाइम्स ऑफ इंडिया में यह संख्या 9 रही जबकि हिंदुस्तान टाइम्स में स्वास्थ समाचारों की संख्या 2 रही. स्वास्थ्य कैंप या शिविर से संबंधित समाचारों की संख्या की बात करें तो दैनिक जागरण में 17 स्वास्थ्य समाचार की आवृत्ति हुई. अमर उजाला में यह संख्या 18 रही तो द टाइम्स

ऑफ इंडिया में कोई भी आवृत्ति नहीं रही. जबकि हिंदुस्तान टाइम्स में भी यह संख्या शून्य रही. सरकारी स्वास्थ्य संबंधी खबरों की बात करें तो दैनिक जागरण में 24 स्वास्थ्य खबरों की आवृत्ति हुई. अमर उजाला में 18 स्वास्थ्य खबरों की आवृत्ति हुई. द टाइम्स ऑफ इंडिया में 12 खबरों की आपूर्ति हुई तो हिंदुस्तान टाइम्स में 8 स्वास्थ्य खबरों की आवृत्ति हुई.

अगले क्रम में असाध्य रोगों से संबंधित समाचारों की बात करें तो इसमें दैनिक जागरण में 45 खबरों की आवृत्ति पाई गई. अमर उजाला में स्वास्थ्य संबंधी खबरों की आवृत्ति 39 रही जबकि द टाइम्स ऑफ इंडिया में स्वास्थ्य संबंधित समाचारों की आवृत्ति की संख्या 47 रही और हिंदुस्तान टाइम्स में यह संख्या 43 रही. इसी क्रम मौसमी बीमारियों से संबंधित समाचार दैनिक जागरण में 19 रहे जबकि अमर उजाला में यह संख्या 27 रही तो वहीं द टाइम्स ऑफ इंडिया में केवल दो समाचारों की आवृत्ति हुई यही स्थिति हिंदुस्तान टाइम्स में भी रही वहां पर भी दो ही स्वास्थ्य समाचारों की आवृत्ति हुई. इस तरह देखा जाए तो आवृत्ति के आधार पर कुल स्वास्थ्य समाचारों की संख्या में दैनिक जागरण ने 132 खबरें प्रकाशित की तो वहीं अमर उजाला ने 121 स्वास्थ्य खबरों को द्वारा प्रकाशित किया तो द टाइम्स ऑफ इंडिया में 70 खबरों का प्रकाशन हुआ तो वही हिंदुस्तान टाइम्स में यह संख्या 55 रही.

इस तरह प्रस्तुत शोध अध्ययन में चयनित समाचारपत्रों ने विभिन्न स्वास्थ्य समाचारों की आवृत्ति की है जिसमें पता चलता है की स्वास्थ्य समाचारों की शब्दावली तो जरूर परिवर्तित हुई है लेकिन स्वास्थ्य से संबंधित समाचारों में उसकी महत्ता कहीं भी कम नहीं है.

शोध प्रश्न 03: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित सरकारी स्वास्थ्य ख़बरों के माध्यम से सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है?

सरकारी स्वास्थ्य योजना के बारे में जानकारी कैसे प्राप्त करते हैं जिसके जवाब में इस प्रस्तुत अध्ययन में 50 लोगों ने कहा कि प्रिंट मीडिया से करते हैं जबकि इलेक्ट्रोनिक मीडिया से कहने वालों की संख्या 245 रही वही बैनर एवं होर्डिंग से प्राप्त करने वालों की संख्या जीरो थी और अन्य माध्यमों से प्राप्त करने वालों की संख्या 20 रही. सरकारी सेवाओं की जानकरी देने में क्या मीडिया और सरकार वास्तविक रूप से स्वास्थ्य संचार के प्रति गंभीर हैं इसके जवाब में 132 लोगों ने हां कहा तो नहीं कहने वाले 75 लोग थे और 289 लोगों ने कुछ नहीं कह सकते कहा.

शोध प्रश्न 04: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों को पढ़कर पाठकों के व्यवहार में परिवर्तन होता है?

शोध अध्ययन में समाचार पत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी खबरों को पढ़कर पाठकों के व्यवहार में परिवर्तन कैसा रहा इसे जानने के लिए प्रश्नावली की सहायता ली गई जिसमें ज्ञात हुआ कि इन स्वास्थ्य समाचारों का पाठक वर्ग पर विभिन्न दृष्टिकोण से प्रभाव भी अच्छा हुआ है लोग अपनी जीवनशैली को बदलने के लिए छोटे-मोटे इलाज के लिए अक्सर अखबारों का सहारा लेते हैं. स्वास्थ्य कैंप और शिविर जैसे समाचारों से लोग जागरूक तो होते ही हैं साथ ही उनमें असाध्य रोगों के प्रति एक जन जागरूकता भी बढ़ती है. स्वास्थ्य समाचार स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक हैं इसके जवाब में 452 लोगों ने हमें हाँ में उत्तर दिया जबकि नहीं कहने वालों की संख्या 5 थी और 38 कुछ कुछ लोगों ने कहा. स्वास्थ्य समाचारों से जनता में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही है इसका जवाब में 187 लोगों ने हाँ में उत्तर दिया नहीं का उत्तर देने वाले 12 लोग थे

पता नहीं या कह नहीं सकते ऐसे 292 लोगों ने विकल्प चुना. स्वास्थ्य संबंधी समाचारों से जीवन शैली प्रभावित होती है जिसके जवाब में 187 लोगों ने हां का विकल्प चुना तो 23 लोगों ने नहीं का विकल्प चुना जबकि कुछ नहीं कह सकते का विकल्प 36 लोगों ने चुना और कुछ-कुछ का विकल्प 242 लोगों ने चुना. लोगों ने माना कि वे स्वास्थ्य समाचारों में घरेलू नुस्खे या प्राथमिक उपचार को प्राथमिकता देते हैं जिसके जवाब में 438 लोगों ने हां का विकल्प चुना तो नहीं का विकल्प चुनने वाले जीरो थे और कुछ नहीं कह सकते ऐसा जवाब 17 लोगों ने चुना. अध्ययन के अनुसार लोग स्वास्थ्य से संबन्धित खबरों को भी प्राथमिकता दे रहे हैं तथा इस प्रकार की खबरों को और अधिक प्रभावशाली बनाने के समर्थन में हैं. पाठकों ने माना कि समाचारपत्र स्वास्थ्य के बारे में जानकारी तो दे रहे हैं. लोगों ने माना कि समाचारपत्र उनके खान-पान, जीवनशैली को स्वास्थ्य कि दृष्टि से अभी इतना प्रभावित नहीं कर रहे जितना अन्य समाचार कर रहें हैं.

शोध प्रश्न 05: क्या समाचारपत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों के स्त्रोत प्रमाणिक होते हैं?

शोध अध्ययन में स्वास्थ संबंधी ख़बरों की प्रमाणिकता के अध्ययन के लिए ख़बरों के तीन विश्वसनीय स्त्रोतों का अध्ययन किया गया है पहला शोध एवं रिपोर्ट के आधार पर, दूसरा संवाददाताओं के आधार पर और तीसरा न्यूज एजेंसी या अन्य स्त्रोत के आधार पर स्वास्थ संबंधी खबरों का वर्गीकरण किया गया है.

शोध एवं रिपोर्ट के आधार पर जो स्वास्थ्य समाचार दैनिक जागरण में प्रकाशित हुए ऐसे समाचारों की संख्या 86 रही जबकि अमर उजाला में शोध एवं रिपोर्ट के आधार पर प्रकाशित होने वाले समाचारों की संख्या 42 रही तो वहीं द टाइम्स ऑफ इंडिया में

शोध एवं रिपोर्ट के आधार पर प्रकाशित होने वाले समाचारों की संख्या 24 रही जबकि शोध एवं रिपोर्ट के आधार पर हिंदुस्तान टाइम्स में 9 खबरों को प्रकाशित किया गया है. इसी तरह संवाददाताओं के आधार पर दैनिक जागरण में प्रकाशित होने वाले स्वास्थ समाचारों की संख्या 114 मिली. जबकि अमर उजाला में संवाददाताओं के आधार पर प्रकाशित होने वाले स्वास्थ्य समाचारों की संख्या 83 रही. इसी तरह द टाइम्स ऑफ इंडिया में 37 स्वास्थ्य समाचार प्रकाशित हुए जबकि संवाददाताओं के आधार पर हिंदुस्तान टाइम्स में प्रकाशित होने वाले स्वास्थ्य समाचारों की संख्या 49 रही. इसी तरह न्यूज़ एजेंसी या अन्य स्रोत के आधार पर दैनिक जागरण में प्रकाशित होने वाले स्वास्थ संबंधी समाचारों की संख्या 97 प्राप्त हुई जबकि अमर उजाला में प्राप्त होने वाले समाचारों की संख्या 81 रही. द टाइम्स ऑफ इंडिया में यही संख्या 52 रही और हिंदुस्तान टाइम्स में न्यूज़ एजेंसी या अन्य स्रोत के आधार पर प्रकाशित होने वाले स्वास्थ संबंधी समाचारों की संख्या 30 रही. इस तरह स्वास्थ समाचारों के स्रोत के अध्ययन में शोध एवं रिपोर्ट, संवाददाता और न्यूज़ एजेंसी या अन्य शोध के आधार पर प्रकाशित होने वाली खबरों में दैनिक जागरण ने कुल 297 स्वास्थ्य खबरें प्रकाशित की जबकि अमर उजाला ने 206 स्वास्थ्य खबरें प्रकाशित की तो वही द टाइम्स ऑफ इंडिया ने 113 स्वास्थ्य खबरों का प्रकाशन किया एवं हिंदुस्तानटाइम्स ने 88 स्वास्थ्य खबरों का प्रकाशन किया है.

इस तरह प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चयनित समाचारपत्रों ने अपनी-अपनी योजना एवं नीतियों के अनुसार कार्य किया है जिसमें वित्तीय, लोकप्रियता, प्रबंधन आदि को ध्यान में रखते हुए ही स्वास्थ्य से संबन्धित समाचारों, आलेखों एवं विज्ञापनों को प्रकाशित किया गया है. चूंकि चयनित समाचारपत्र सर्कुलेशन के स्तर पर काफी आगे हैं इसलिए

इनकी महत्ता भी समाज के स्वास्थ्य के प्रति बढ़ जाती है. स्वास्थ्य समाचारों के कुल 704 प्रकाशन से इसकी स्थिति का अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इन मुद्रित माध्यमों ने अपना-अपना उत्तरदायित्व बखूबी किया है. जहां तक बात है जनसमान्य में व्याप्त स्वास्थ्य समस्याओं की तो सभी समाचारपत्रों ने तुलनात्मक रूप से आवश्यक स्वास्थ्य शिविर, मौसमी बीमारियाँ, नयी स्वास्थ्य तकनीक, योग व्यायाम के तरीके, घरेलू नुस्खे आदि के माध्यम से अवगत कराया है.

2011 की जनगणना के अनुसार पता चलता है कि भारत में साक्षरता दर बढ़ी है 2001 की तुलना में बढ़ी है भारत में लोग शिक्षित हो रहे हैं, साथ ही साथ उनमें पढ़ने और जानने की उत्सुकता बढ़ रही है जिसके कारण भारत में प्रिंट मीडिया का प्रसार बढ़ रहा है. आज भी लोग किसी भी खबर की सत्यता को जानने, विस्तृत जानकारी प्राप्त करने और जागरूकता बढ़ाने में अखबार का सहारा लेते हैं. प्रिंट मीडिया भले ही बहुत ही धीमा माध्यम हो, परंतु यह आज के कम्प्यूटर के युग में यह प्रगति कर रहा है. इन सब बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रिंट मीडिया का भविष्य उज्ज्वल है.अगर प्रिंट में भी अध्ययन समाचारपत्रों कि भूमिका का अध्ययन करें तो पता चलता है कि जनकल्याणकरी योजनाओं में समाचारपत्रों की भूमिका भी सकारात्मक दिशा में दिखाई देती है जिसमें तमाम सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी तो होती ही है साथ ही विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, निजी चिकित्सकों के द्वारा आयोजित नई-नई योजनाओं के बारे में भी जानकारी लोगों को प्राप्त होती हैं. समाचारपत्रों में स्वास्थ्य से संबन्धित दृष्टिकोण को हम इस प्रकार जान सकते है कि दैनिक जागरण प्रत्येक दिन शोधपरक के तौर पर स्वास्थ्य से संबन्धित समाचारों को 'शोध अनुसंधान' नाम से रिजर्व रखता है जिससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि यह समाचारपत्र स्वास्थ्य की खबरों

को तवज्जो दे रहा है. ठीक इसी प्रकार अमर उजाला भी स्वास्थ्य संबंधी समाचारों को प्रकाशित करता है. चयनित समाचारपत्रों के शोधपरक स्वास्थ्य संचार पर नज़र डालें दैनिक जागरण और अमर उजाला ने शोधपरक समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया है हालांकि द टाइम्स ऑफ़ इंडिया को पढ़ने वाला एक विशेष पाठकवर्ग है जो तथ्यपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक समाचारों को ही महत्त्व देता है इसीलिए उन्होंने असाध्य रोगों के संबंधी वाली स्वास्थ्य ख़बरों को अधिक महत्त्व दिया है. ठीक इसी प्रकार हिंदुस्तान टाइम्स का अपना एक विशेष पाठक वर्ग है जो कि असाध्य रोग से सम्बंधित ख़बरें ही प्रकाशित करता है.

इस प्रस्तुत शोध अध्ययन में चारों ही समाचारों ने तुलनात्मक रूप से अपनी अपनी संस्थान की नीतियों के अनुसार स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन किया है जिसमें सर्वाधिक समाचार प्रकाशन करने वाले में दैनिक जागरण का नाम है उसके बाद अमर उजाला है तथा उसके बाद द टाइम्स ऑफ इंडिया का नाम आता है और फिर हिंदुस्तान टाइम्स है.

हमारे इस शोध अध्ययन में स्वास्थ समाचारों के सबसे मूलभूत तत्व ख़बरों की परिशुद्धता मापने के लिए स्रोत का अध्ययन महत्वपूर्ण है जिसमें स्वास्थ्य की खबरों को मापने के लिए और समाचारों का परिशुद्धता के अधिकतम नजदीक होने के लिए तीन भागों में वर्गीकरण किया गया है पहला शोध एवं रिपोर्ट, दूसरा संवाददाता, और तीसरा न्यूज़ एजेंसी या अन्य स्रोत. इस शोध अध्ययन से यह भी पता चलता है कि अधिकतर खबरों की परिशुद्धता ठीक है. इसके पीछे सबसे बड़ा कारण शोध समाचार और सरकारी समाचार तो है ही साथ ही साथ इनके स्रोतों का आधार है. जिसमें अधिकतर स्वास्थ्य समाचार किसी शोध रिपोर्ट के आधार पर हैं या फिर किसी जांच एजेंसी के आधार पर हैं

या खुद पत्रकारिता संस्थान के पत्रकार द्वारा मूलभूत तथ्यों पर लिखे गए हैं. जिसमें सामने आता है कि ऐसे समाचारों की उपयोगिता एवं विश्वसनीयता स्वयं बढ़ जाती है क्योंकि यह समाचार बहुत हद तक परिशुद्ध समाचार की श्रेणी में रखे जा सकते हैं. हमारे इस अध्ययन में स्वास्थ्य समाचारों की परिशुद्धता अधिकतम स्वास्थ्य समाचारों में पाई गई है.

इस तरह शोध अध्ययन के अनुसार कहा जा सकता है कि चारों ही समाचार पत्रों ने स्वास्थ्य से संबंधित समाचारों को अपनी-अपनी नीतियों के अनुसार प्रकाशन किया है साथ ही इन स्वास्थ्य समाचारों में स्वास्थ्य से संबंधित समाचारों की आवृत्ति भी हुई है और उनमें विभिन्न जैसे शोध सामग्री, स्वास्थ्य कैंप, सरकारी स्वास्थ्य समाचार, असाध्य रोग, और मौसमी बीमारियों का भी प्रकाशन अच्छी तरह हुआ है हालांकि अंग्रेजी के समाचार पत्रों ने हिंदी के समाचार पत्रों की तुलना में कम प्रकाशन किया है. जिसका कारण उसके अपने विशेष पाठक वर्ग का होना है. इन स्वास्थ्य समाचारों में सरकार की स्वास्थ्य नीतियों के अनुसार विभिन्न प्रकार के सरकारी स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन भी हुआ है. शोध अध्ययन से यह पता भी चलता है कि इन स्वास्थ्य समाचारों का पाठक वर्ग पर विभिन्न दृष्टिकोण से प्रभाव भी अच्छा हुआ है लोग अपनी जीवनशैली को बदलने के लिए छोटे-मोटे इलाज के लिए अक्सर अखबारों का सहारा लेते हैं. स्वास्थ्य कैंप और शिविर जैसे समाचारों से लोग जागरूक तो होते ही हैं साथ ही उनमें असाध्य रोगों के प्रति एक जन जागरूकता भी बढ़ती है. शोध अध्ययन के अनुसार शोध में ज्यादातर चयनित स्वास्थ्य समाचारों का स्रोत प्रमाणिक रहा है जिसमें अनुसंधान और सरकारी योजनाओं से संबंधित स्वास्थ समाचारों की संख्या भी अच्छी रही है जिससे साफ पता चलता है कि स्वास्थ्य समाचारों की परिशुद्धता ठीक है. स्वास्थ्य

समाचारों का जनमानस पर क्या प्रभाव पड़ा ? यह जानने के लिए हमने प्रश्नावली का सहारा लिया जिसमें हमने जाना कि लोग स्वास्थ्य से संबन्धित खबरों को भी प्राथमिकता दे रहे हैं तथा इस प्रकार की खबरों को और अधिक प्रभावशाली बनाने के समर्थन में हैं. पाठकों ने माना कि समाचारपत्र स्वास्थ्य के बारे में जानकारी तो दे रहे हैं. लोगों ने माना कि समाचारपत्र उनके खान-पान, जीवनशैली को स्वास्थ्य कि दृष्टि से अभी इतना प्रभावित नहीं कर रहे जितना राजनैतिक और मनोरंजन समाचार करते हैं. लोगों से प्राप्त उत्तरों के अनुसार लोग सबसे पहले राजनैतिक फिर मनोरंजन उसके बाद ही स्वास्थ्य से संबन्धित खबरों को महत्त्व देते हैं.

सुझाव:

प्रस्तुत शोध प्रबंध में चयनित समाचार पत्रों ने स्वास्थ्य संबंधित खबरों के प्रकाशन के मामले में अपनी संस्थान की नीतियों के अनुसार पालन किया है. हमारे शोध अध्ययन से पता चलता है की चयनित समाचार पत्रों ने स्वास्थ संबंधी खबरों का प्रकाशन तो किया है. लेकिन स्वास्थ्य संबंधी समाचार जो कि किसी भी प्राणी मात्र के लिए आवश्यकता है. और अधिक विस्तार होना चाहिए दैनिक जागरण ने स्वास्थ्य से संबंधित खबरों की प्रसिद्ध के मामले में अच्छी पहल दिखाई है जिसे अन्य समाचार पत्रों को भी अपने समाचार पत्र में जगह देनी चाहिए. अमर उजाला ने कुछ हद तक समाचारों की व्यवस्थित क्रम को प्रकाशित करने की कोशिश की है लेकिन उसे पूर्णरूपेण नहीं किया है इसलिए उसमें सुधार की आवश्यकता है जबकि अंग्रेजी माध्यम के समाचार पत्रों ने व्यवस्थित तरीके से एक निश्चित अंतराल पर स्वास्थ संबंधी खबरों के प्रकाशन पर रुचि नहीं दिखाई है. जबकि स्वास्थ्य एक ऐसा विषय है जिसको हर दिन प्रतिदिन आम जनमानस अपनी जिंदगी में जीता है. जिस को ध्यान में रखते हुए हमारे

जन माध्यमों को समाज के प्रति स्वास्थ्य जैसे मुद्दे पर और अधिक स्वास्थ्य से संबंधित खबरों का प्रकाशन करना चाहिए विशेष तौर पर अंग्रेजी समाचारों के समाचार पत्रों को अधिक ध्यान देना चाहिए. समाचारों की परिशुद्धता को और अधिक तरीके से वैज्ञानिक दृष्टिकोण में रहते हुए उसके प्रकाशन में विभिन्न शोध रिपोर्ट आदि का सहारा लेना उचित रहेगा जिससे उसका प्रभाव जनजीवन पर अच्छा पड़े क्योंकि लोगों का मानना है कि समाचार पत्रों में प्रकाशित स्वास्थ्य से संबंधित खबरें उनको न केवल जागरूक करती हैं बल्कि अपने स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील भी बनाती हैं हालांकि भारत सरकार लगातार महामारियों पर अंकुश लगाने के लिए प्रयत्नशील है जिसमें उसने पोलियो जैसी बीमारियों का भी खात्मा किया है इसी तरह कुछ बीमारियाँ जैसे एड्स, टीबी कैंसर, मधुमेह आदि असाध्य रोगों के विनाश के लिए सरकार कि ओर से हर संभव प्रयास किए जा रहें हैं इसीलिए एक स्वस्थ समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए समाचार पत्रों को और अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वास्थ्य समाचारों का प्रकाशन व्यवस्थित तरीके से करना चाहिए.